# राजस्थान का एकीकरण -

: मेवाड़ के महाराणा भूपाल सिंह **'राजस्थान यूनियन'** के गठन का प्रयास किया, लेकिन इसमें कामयाबी नहीं मिली। **5 जुलाई 1947** को **वल्लभ भाई पटेल** की अध्यक्षता में **'रियासती सचिवालय'** की स्थापना हुई।**18 जुलाई 1947** को **'भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम'** पारित किया गया था। रियासती सचिवालय ने घोषणा की। कि वे रियासतें जिनमें जनसंख्या 10 लाख से अधिक हो और आय 1 करोड़ से अधिक हो, वे रियासतें स्वतंत्र रह सकती है। **रियासती सचिवालय** कि इन शर्तों को पूरा करने के लिए राजस्थान में सिर्फ **चार** रियासतें थी। **मेवाड़, जयपुर, जोधपुर, बीकानेर**। अब हम **राजस्थान के एकीकरण** के सभी **सात चरणों** का विस्तार से पढ़ेंगे।

- सबसे प्राचीन रियासत - मेवाड़।
- सबसे नवीन रियासत - झालावाड़।
- क्षेत्रफल के आधार पर सबसे बड़ी रियासत - मारवाड़।
- क्षेत्रफल के आधार पर सबसे छोटी रियासत - शाहपुरा।
- जनसंख्या के आधार पर सबसे बड़ी रियासत - जयपुर
- जनसंख्या के आधार पर सबसे छोटी रियासत - शाहपुरा।

## राजस्थान में रियासतें और ठिकाने

| रियासतें(19) | ठिकानें(3) | केन्द्रशासित प्रदेश(1) |
|---|---|---|
| अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली, बांसवाड़ा, बूंदी, डूंगरपुर, झालावाड़, किशनगढ़, कोटा, प्रतापगढ़, शाहपुरा, टोंक, उदयपुर, बीकानेर, जयपुर, जैसलमेर, जोधपुर, सिरोही | नीमराणा,कुशलगढ़ और लावा | अजमेर-मेरवाडा |

## एकमात्र मुस्लिम रियासत - टोंक।

- राजपूत रियासत – 16
- जाट रियासत -2(भरतपुर व धौलपुर)
- मुस्लिम रियासत – 1(टोंक)

Accelerate your study with educlutch.com

## सलामी का आधार :

- सर्वाधिक(19) तोपों की सलामी वाली रियासत - उदयपुर
- किशनगढ़ व शाहपुरा रियासतों को तोपों की सलामी का अधिकार नहीं था।

## सम्पूर्ण राजस्थान का एकीकरण **सात** चरणों में हुआ।

राजस्थान का एकीकरण सारणी

- प्रथम चरण - मत्स्य संघ (18 मार्च 1948)
- दूसरा चरण - पूर्व राजस्थान (25 मार्च 1948)
- तीसरा चरण - संयुक्त राजस्थान (18 अप्रैल 1948)
- चौथा चरण - वृहद राजस्थान (30 मार्च, 1949)
- पांचवा चरण - संयुक्त वृहद् राजस्थान (15 मई, 1949)
- छठा चरण - राजस्थान संघ (26 जनवरी, 1950)
- सातवां चरण - वर्तमान राजस्थान (1 नवम्बर 1956)

### मत्स्य संघ का निर्माण -

## राजस्थान एकीकरण का प्रथम चरण - मत्स्य संघ

| | |
|---|---|
| दिनांक | 18 मार्च 1948 |
| रियासतें एवं ठिकाने | अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली और **नीमराना ठिकाना**। |
| प्रधानमंत्री | शोभाराम कुमावत (अलवर) |
| उप प्रधानमंत्री | युगल किशोर चतुर्वेदी(भरतपुर) |
| राजप्रमुख | उदयभान सिंह (धौलपुर) |
| उपराजप्रमुख | गणेशपाल देव (करौली) |

Accelerate your study with educlutch.com

| | |
|---|---|
| नामकरण | के. एम्. मुंशी |
| उद्घाटन | कचहरी कला, लोहागढ़ (भरतपुर ) |
| उद्घाटनकर्ता | एन. वी. गाडगिल(नरहरि विष्णु गाडगिल) |
| राजधानी | अलवर |
| जनसंख्या | 18 लाख |
| वार्षिक आय | 1.84 करोड़ |
| क्षेत्रफल | 12000 वर्ग किमी |

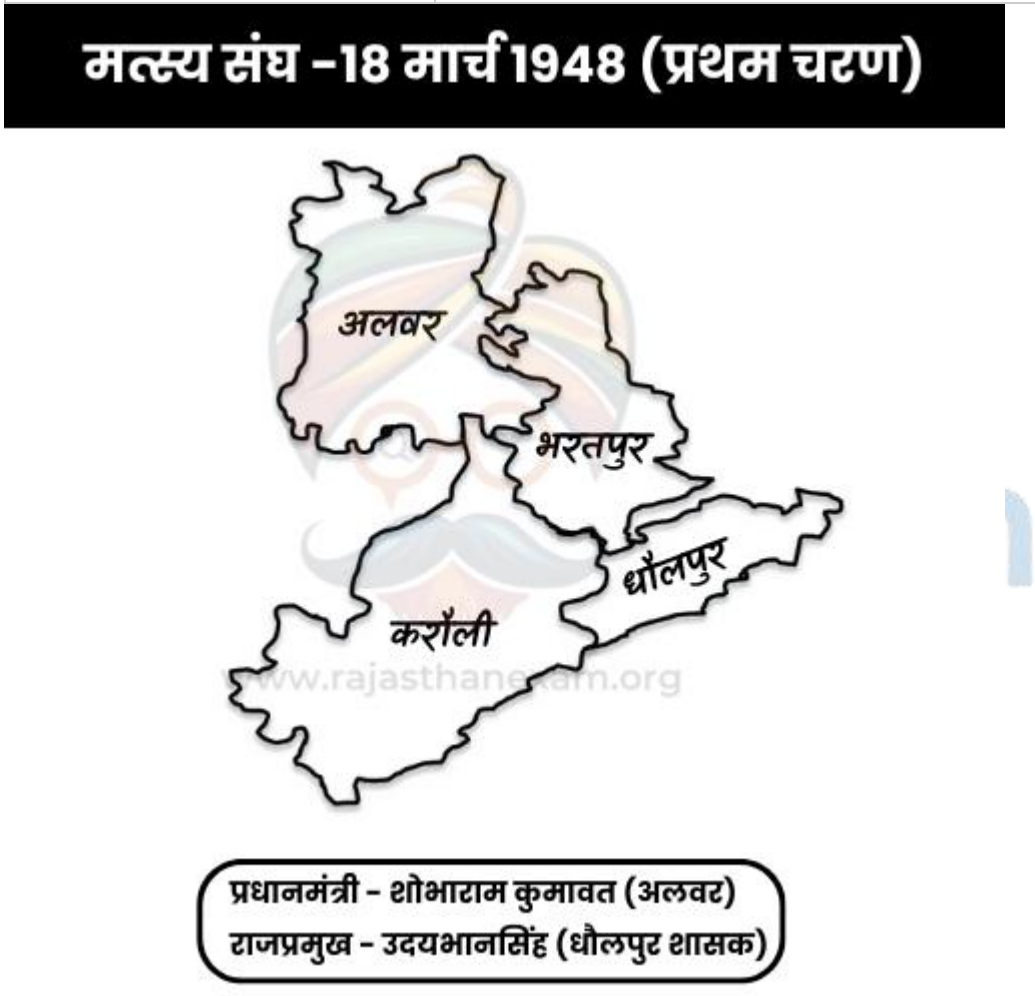


मत्स्य संघ का निर्माण

Accelerate your study with educlutch.com

स्वतंत्रता के साथ ही देश का विभाजन हुआ। इस विभाजन के साथ ही साम्प्रदायिक दंगे भडक उठे थे। इन दंगों का सीधा प्रभाव राजस्थान की **अलवर और भरतपुर** रियासतों पर पडा। क्योंकि यहां पर मुसलमानों व मेव जाति का ज्यादा प्रभाव था। अलवर के दीवान **बी.एन. खरे व महाराज तेजसिंह** थे।

केन्द्र सरकार ने अलवर के महाराजा व दीवान को अपने राज्य में साम्प्रदायिक शांति व कानून व्यवस्था बनाने के लिए जोर दिया और कहा कि अगर आपसे प्रशासन नहीं सम्भाला जा रहा है तो अलवर का प्रशासन केन्द्र को सौंप दीजिए, लेकिन अलवर के महाराजा व दीवान ने आग्रह किया कि कुछ दिनों में ही सारी स्थितियों कों सामान्य कर दिया जाएगा।

## महात्मा गांधी की हत्या

लेकिन 30 जनवरी, 1948 का दिल्ली में महात्मा गांधी का हत्या **नाथूराम गोडसे** के द्वारा कर दी जाती है। नाथूराम गोडसे हिन्दु महासभा के कार्यकर्ता थे। डाॅ. बी. एन. खरे के सम्बन्ध में यह अफवाह फैली की डाॅ. खरे हिन्दू महासभा के सक्रिय कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण का केन्द्र बना है तथा अलवर राज्य में गांधी की हत्या के लिए उत्तरदायी कुछ षडयंत्रकारियों को शरण भी प्रदान की हैं।

**डाॅ. बी. एन. खरे** की कट्टर हिन्दूवादी विचारधारा के कारण ऐसी अफवाहों को काफी बल प्राप्त हो रहा था। अतः भारत सरकार ने अलवर राज्य का प्रशासन तत्काल प्रभाव से अपने हाथ में ले लिया और 7 फरवरी, 1948 को अलवर के **महाराजा तेजसिंह** व दीवान **बी. एन. खरे** को तब तक के लिए दिल्ली में रहने का आदेश दिया जब कि उनको विरुद्ध गांधी हत्याकांड में इनके हाथ होने के आरोप की पूरी जांच नहीं हो जाती।

## भरतपुर में भी साम्प्रदायिक दंगे

उधर भरतपुर में भी साम्प्रदायिक दंगों से भारत सरकार काफी चिंतित थीं। भरतपुर के खिलाफ केन्द्र कोई कार्यवाही करता इससे पहले ही भरतपुर के महाराजा **बृजेन्द्र सिंह** केन्द्र से आग्रह करते हैं कि भरतपुर का प्रशासन केन्द्र अपने केन्द्र अपने हाथों में ले ले।

केन्द्र के पास **अलवर और भरतपुर** दो रियासतें आ चुकी थीं। अब अलवर और भरतपुर राज्य की सीमाओं से लगी हुई **धौलपुर व करौली** दो छोटी-छोटी रियासते थीं। ये चारों रियासतें **अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर** भारत सरकार द्वारा निर्धारित मापदंड 1 करोड वार्षिक आय तथा 10 लाख जनसंख्या के मापदंड को पूरा नहीं करती थीं।

इसलिए यह रियासतें स्वतंत्र अस्तित्व नहीं बनाए रख सकती थीं। अतः सोचा गया कि चारों रियासतों को मिलाकर **एक संघ** का निर्माण कर लिया जाए। तब भारत सरकार ने 27 फरवरी, 1948 को चारों राज्यों के शासकों की बैठक दिल्ली में आयोजित की।

राजस्थान के एकीकरण के समय **भरतपुर और धौलपुर** रियासत **भाषाई आधार** पर उत्तर प्रदेश में सम्मिलित होना चाहती थी। **धौलपुर एवं भरतपुर** राज्यों की जनता की राय जानने के लिए **शंकर राव देव समिति** का गठन किया गया। जिसके अध्यक्ष **शंकर राव देव** एवं दो अन्य सदस्य प्रभुदयाल व आर. के. सिंधावा थे।

# कन्हैयालाल माणिक्यलाल मुंशी के आग्रह

Accelerate your study with educlutch.com

जिसमें भारत सरकार ने इन चारों रियासतों को मिलाकर एक संघ बनाने का प्रस्ताव रखा। बैठक में उपस्थित सभी ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। **श्री कन्हैयालाल माणिक्यलाल मुंशी** के आग्रह पर इस नए आग्रह इस नए संघ रखा गया।

क्योंकि **महाभारत** काल में यह क्षेत्र **मत्स्य संघ** के नाम से विख्यात था। मत्स्य संघ में सम्मिलित चारों राज्यों के शासकों को यह स्पष्ट कर दिया गया कि भविष्य में यह संघ राजस्थान अथवा उत्तरप्रदेश में विलीन किया जा सकता है।

क्योंकि आर्थिक दृष्टि से यह संघ आत्मनिर्भर नहीं हो सकेगा। मत्स्य संघ में चार रियासतें **अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली** का विधिवत् उद्घाटन भारत सरकार के मंत्री श्री **एन. वी. गाडगिल** के द्वारा 18 मार्च 1948 को किया गया।

**अलवर** को मत्स्य संघ की राजधानी बनाया गया। अलवर प्रजामंडल के नेता **शोभाराम कुमावत** मत्स्य संघ के प्रधानमंत्री बने। तथा धौलपुर के **उदयभान सिंह** को बनाया गया।

मत्स्य संघ से जुड़े महत्त्वपूर्ण तथ्य :

- मानसिंह व डॉक्टर देशराज का संबंध मत्स्य संघ से था।
- **उत्तमा देवी**(डॉक्टर देशराज की पत्नी) का संबंध मत्स्य संघ से था ,जिन्होंने कटराथल सम्मेलन में ओजस्वी भाषण दिया था।
- **मत्स्य संघ से जुड़े अन्य मंत्री** – गोपीलाल यादव (धौलपुर), चिरंजीलाल शर्मा (करौली), डॉक्टर मंगल सिंह (धौलपुर), मास्टर भोलानाथ (अलवर)।

## पूर्व राजस्थान(राजस्थान संघ) 25 मार्च, 1948

# राजस्थान एकीकरण का दूसरा चरण - पूर्व राजस्थान संघ

| | |
|---|---|
| दिनांक | 25 मार्च 1948 |
| रियासतें एवं ठिकाने | टोंक, बूंदी, कोटा, झालावाड़, शाहगढ़, प्रतापगढ़, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, (ठिकाना-कुशलगढ़) और किशनगढ़(9) |
| प्रधानमंत्री | गोकुल लाल असावा (शाहपुरा) |
| राजप्रमुख | भीम सिंह -II (कोटा) |

Accelerate your study with educlutch.com

| | |
|---|---|
| उपराजप्रमुख | बहादुरसिंह (बूंदी) |
| राजधानी | कोटा |
| उद्घाटन | कोटा |
| उद्घाटनकर्ता | एन. वी. गाडगिल(नरहरि विष्णु गाडगिल) |
| जनसँख्या | 23 .5 लाख |
| वार्षिक आय | 2 करोड़ |
| क्षेत्रफल | 16,800 वर्ग किमी |

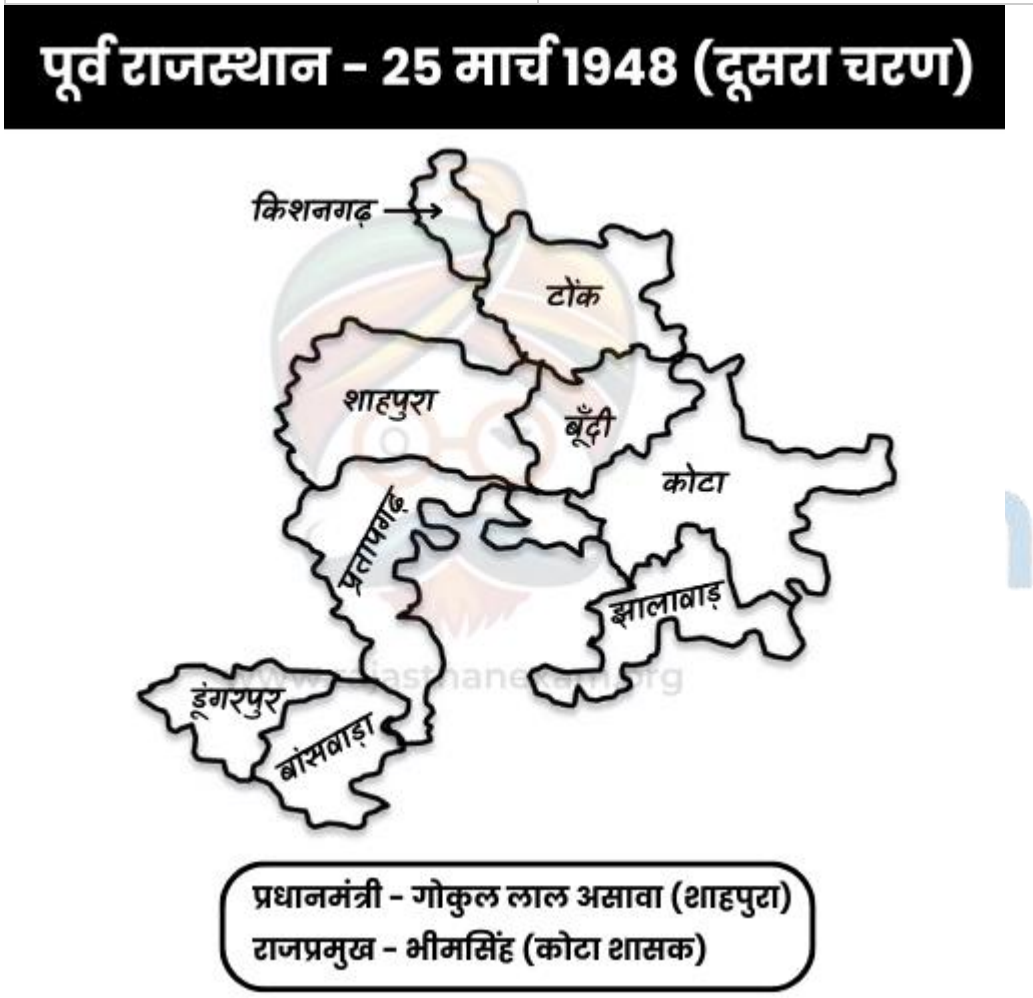


**कोटा** के महाराव **भीमसिंह** ने केन्द्र के सामने **हाड़ौती संघ** बनाने का प्रस्ताव रखा। जिसमें कोटा-बूंदी-झालावाड़, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, शाहपुरा, टोंक व किशनगढ़ के राज्य शामिल हों। लेकिन केन्द्र सरकार ने भीमसिंह जी को

Accelerate your study with educlutch.com

समझाया कि आप इस संघ का नाम हाडौती संघ ना दें, कोई और नाम दे दें, जिससे दूसरी रियासतें भी इस संघ में सम्मिलित हो सकें।

***दक्षिणी राजपूताना के छोटे राज्यों को एकीकृत करने के लिए 'हाड़ौती संघ' बनाने का प्रस्ताव कोटा के शासक महाराज भीम सिंह ने दिया था । हाड़ौती क्षेत्र की तीन रियासतें कोटा, बूँदी, । झालवाड़ को मिलाकर 'हाडौती संघ' का निर्माण करना चाहते थे । इस संघ में 9 राज्य - बांसवाड़ा, डुंगरपुर, प्रतापगढ़, कोटा, बूंदी, झालवाड़, किशनगढ़, शाहपुरा, और टोंक थे। बाद में मेवाड़ राज्य भी इसमें सम्मिलित हो गया।***

ट्रिक : बाबु की झाड़ू को प्रशाटो/ प्रभु किशना को झाड़ू बांटो (-बांसवाडा,बूंदी, किशनगढ़,झालावाङ, डूंगरपुर,कोटा , प्रतापगढ़ शाहपुरा, टोंक)

तब इसे **पूर्व राजस्थान** नाम दिया गया। प्रस्तावित इस संघ के क्षेत्र के बीच में मेवाङ की रियासत थी, किन्तु **रियासती विभाग** द्वारा निर्धारित मापदंड के अनुसार मेवाङ अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखने का अधिकारी था।

इसलिए रियासती विभाग मेवाङ पर प्रस्तावित संघ में विलय के लिए दबाव नहीं डाल सकता था। फिर भी शासकों के आग्रह पर रियासती विभाग ने मेवाङ को नए राज्य में शामिल होने के लिए निमंत्रण दिया किन्तु मेवाङ के महाराणा **भूपालसिंह** ने इस प्रस्ताव का विरोध करते हुए कहा कि मेवाङ अपना 1300 वर्ष पुराना इतिहास भारत के मानचित्र पर समाप्त नहीं कर सकता। और यदि ये रियासते चाहें तो मेवाङ में अपना विलय कर सकती हैं।

मेवाङ रियासत को छोङकर दक्षिणी पूर्वी रियासतों को मिलाकर पूर्व राजस्थान का निर्माण कर लिया जाए। मेवाङ अपनी इच्छानुसार इसमें बाद में सम्मिलित हो सकता है।

## कोटा को राजधानी बनाना

इसी आधार पर 25 मार्च, 1948 को दक्षिणी-पूर्व की 9 रियासतें **कोटा, बूंदी, झालावाङ, डूंगरपुर, बांसवाङा, प्रतापगढ़, शाहपुरा, किशनगढ़, टोंक** रियासतों को मिलाकर **पूर्व राजस्थान** का 25 मार्च, 1948 को केन्द्रीय मंत्री **एन. वी. गाडगिल** के द्वारा पूर्व राजस्थान का विधिवत् रूप से उद्घाटन किया गया। **कोटा** को राजधानी बनाया गया।

कोटा महाराव **भीमसिंह जी** को तथा **गोकुललाल असावा** को प्रधानमंत्री बनाया गया।

# पूर्व राजस्थान से जुड़े महत्त्वपूर्ण तथ्य :

- **बांसवाङा** के **महारावल चन्द्रसिंह** ने पूर्व राजस्थान के निर्माण के समय विलय पत्र पर हस्ताक्षर करते समय यह कहा कि **'मैं अपने डेथ वारंट पर हस्ताक्षर कर रहा हूँ।'**
- **शाहपुरा व किशनगढ़** रियासतों को तोपों की सलामी का अधिकार नहीं था।
- शाहपुरा व किशनगढ़ रियासतों ने विलय का काफी विरोध किया था ।
- सर्वप्रथम पूर्ण उत्तरदायी शासन की स्थापना **शाहपुरा** रियासत में हुई।

Accelerate your study with educlutch.com

संयुक्त राजस्थान 18 अप्रेल, 1948 –

# राजस्थान एकीकरण का तीसरा चरण - संयुक्त राजस्थान

| | |
|---|---|
| दिनांक | 18 अप्रैल 1948 |
| रियासतें | उदयपुर |
| प्रधानमंत्री | माणिक्यलाल वर्मा (उदयपुर) |
| उप प्रधानमंत्री | गोकुल लाल असावा |
| राजप्रमुख | भूपाल सिंह (उदयपुर) |
| उपराजप्रमुख | भीम सिंह (कोटा) |
| राजधानी | उदयपुर |
| उद्घाटन | उदयपुर |
| उद्घाटनकर्ता | पंडित जवाहर लाल नेहरु |
| क्षेत्रफल | 27900 वर्ग किमी |
| जनसँख्या | 40, 60 910 लाख |
| वार्षिक आय | 3.15 करोड़ |

Accelerate your study with educlutch.com

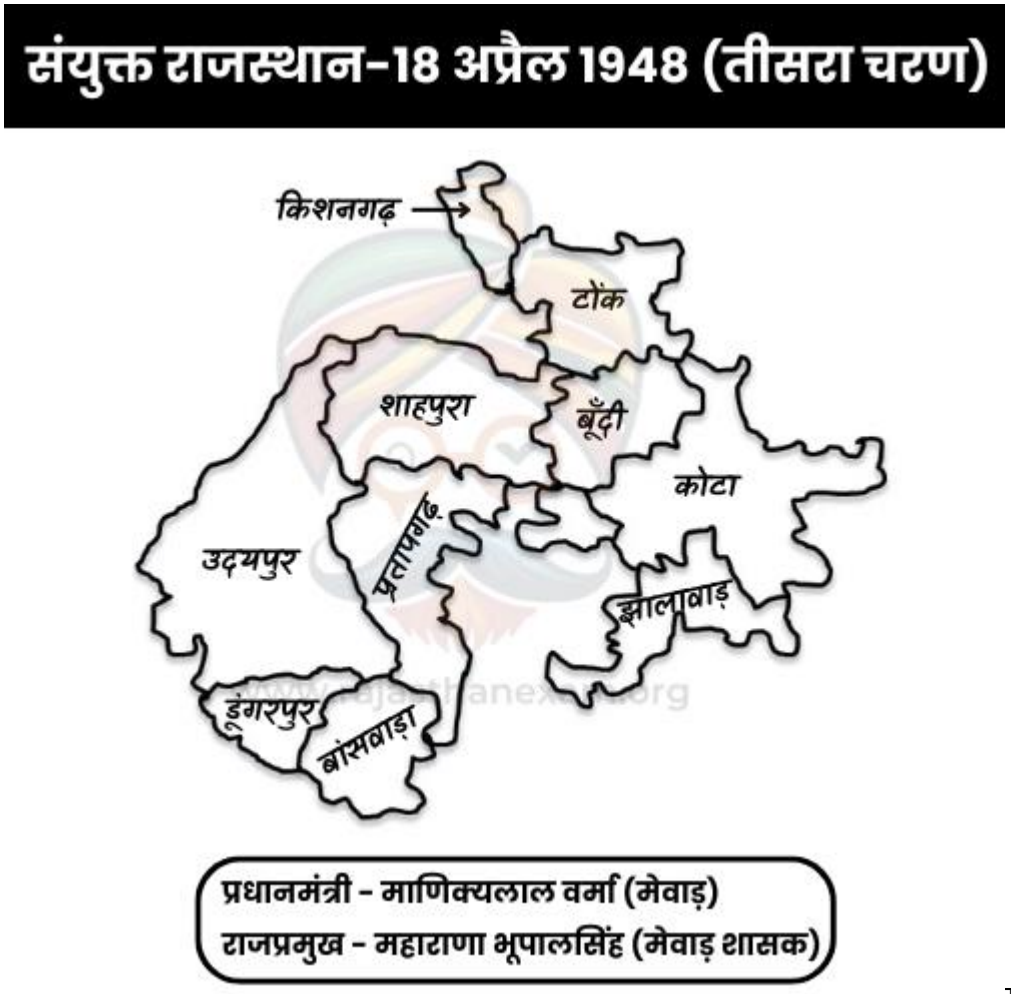


राजस्थान

# एकीकरण का तीसरा चरण

पूर्व राजस्थान में **मेवाङ** का विलय होने के पश्चात **संयुक्त राजस्थान** अस्तित्व में आया। मेवाङ के महाराणा पहले तो विलय के लिए मना कर दिया था, लेकिन बाद में वहां की जनता ने विद्रोह कर दिया था। जनता विलय के पक्ष में थी। तब मेवाङ के महाराणा **भूपालसिंह** ने केन्द्र के समक्ष **तीन शर्तें** रखीं।

**पहली शर्तः** मेवाङ के महाराणा भोपालसिंह को संयुक्त राजस्थान का वंशानुगत राजप्रमुख बनाया जाए।

**दूसरी शर्तः** उदयपुर को संयुक्त राजस्थान की राजधानी बनाया जाए।

**तीसरी शर्तः** बीस लाख रुपया वार्षिक प्रीविपर्स के रूप में दिया जाए।

मेवाङ के महाराणा को वंशानुगत की जगह आजीवन राजप्रमुख बनाया गया तथा दस लाख रुपए प्रीविपर्स के रूप में 5 लाख रुपए वार्षिक राजप्रमुख के पद का भत्ता और शेष 5 लाख रुपए मेवाङ के राजवंश के परंपरा के अनुसार धार्मिक कार्यों के खर्च के लिए दिया गया। तथा प्रधानमंत्री **माणिक्यलाल वर्मा** बनाए गए।

सभी शर्तें पूरी होने के बाद महाराणा ने विलय पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए। तदनुसार **18 अप्रेल, 1948** को **पंडित जवाहरलाल नेहरू** ने संयुक्त राजस्थान का विधिवत् रूप से उद्घाटन किया।

Accelerate your study with educlutch.com

- **राजस्थान से जुड़े अन्य मंत्री -** भूरेलाल बयां, प्रेम नारायण माथुर, मोहन लाल सुखाड़िया, भोगीलाल पण्ड्या, अभिन्न हरि और बृजसुंदर शर्मा थे।
- मेवाड़ महाराणा भूपाल सिंह ने **20 लाख प्रीवीप्रस** की मांग की थी।
- **माणिक्यलाल वर्मा का कथन,** 'मेवाड़ महाराणा भूपाल सिंह एवं उनके मंत्री राममूर्ति मेवाड़ के 20 लाख लोगों के भाग्य का निर्धारण अकेले नहीं कर सकते।'

## वृहत् राजस्थान 30 मार्च, 1949 –

# राजस्थान एकीकरण का चौथा चरण - वृहत राजस्थान

| | |
|---|---|
| दिनांक | 30 मार्च 1949 |
| रियासतें एवं ठिकाने | संयुक्त राजस्थान + जयपुर, जोधपुर, जैसलमेर, बीकानेर रियासतें |
| प्रधानमंत्री | हीरालाल शास्त्री (जयपुर) |
| राजप्रमुख | मानसिंह द्वितीय (जयपुर) |
| **महाराजप्रमुख** | भूपाल सिंह (उदयपुर) |
| उपराजप्रमुख | भीम सिंह (कोटा) |
| राजधानी | जयपुर |
| उद्घाटन | जयपुर |
| उद्घाटन | सरदार वल्लभ भाई पटेल |

Accelerate your study with educlutch.com

# वृहत राजस्थान - 30 मार्च 1949 (चौथा चरण)

प्रधानमंत्री - हीरालाल शास्त्री (जयपुर)
राजप्रमुख - सवाई मानसिंह द्वितीय (जयपुर शासक)

**संयुक्त राजस्थान** में **बीकानेर, जयपुर, जैसलमेर व जोधपुर** को मिलाकर **वृहत राजस्थान** का निर्माण किया गया था। इन चारों रियासतों के विलय में **सरदार वल्लभ भाई पटेल व वी. पी. मेनन** की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही थीं।

ट्रिक : (जयपुर, जैसलमेर, जोधपुर और बीकानेर, ) – **JJJB** यानि **जय - जय - जय - बजरंगबली**

इनमें सरकार द्वारा निर्धारित मापदंड को पूरा करती थी। यानी की वो अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रख सकती थीं। ऐसी परिस्थिति में भारत सरकार ने अत्यंत सावधानी से कार्य किया। विलय के लिए जोधपुर बीकानेर और जैसलमेर के शासकों को समझाया गया कि इन राज्यों की सीमाएं पाकिस्तान से मिली हुई हैं।

जहां से सदेव आक्रमण का भय बना रहता है। फिर इन तीन राज्यों का बहुत बडा क्षेत्र थार के रेगिस्तान का अंग था। तथा यातायात एवं संचार के साधनों की दृष्टि से भी यह क्षेत्र काफी पिछडा हुआ था।

जिसका विकास करना इन राज्यों की आर्थिक सामर्थ्य के बाहर था। तब जयपुर के **महाराजा सवाई मानसिंह** को भी विलय के लिए तैयार करना आसान कार्य नहीं था। परंतु सरदार वल्लभ भाई पटेल व वी. पी. मेनन के प्रयासों से इन सभी रियासतों का कुटनीतिक तरीके से कुछ न कुछ देकर विलय कर लिया गया। इन रियासतों के संदर्भ में वी. पी. मेनन ने एक रिपोर्ट 28 मार्च, 1949 को प्रस्तुत की।

Accelerate your study with educlutch.com

## *जिसके प्रावधान निम्न थे*

1. जयपुर को राजस्थान की राजधानी बनाया जाए। जयपुर के महाराजा सवाई मानसिंह को राजप्रमुख बनाया जाए। उदयपुर के महाराणा भूपालसिंह को **महाराज प्रमुख** बनाया जाए।
2. जोधपुर में उच्च न्यायालय बनाया जाए। जोधपुर को सेना का प्रमुख केन्द्र बनाया जाए। स्कूल शिक्षा का केन्द्र बीकानेर, खनिज विभाग उदयपुर, सिंचाई विभाग भरतपुर में रखा जाए। वी. पी. मेनन की रिपोर्ट को सभी ने स्वीकार कर लिया और मेवाङ के महाराणा भूपालसिंह राजस्थान के पहले **महाराज प्रमुख** बना दिए गए।

- जयपुर के महाराजा मानसिंह वृहत राजस्थान के राजप्रमुख बनाए गए। जयपुर राजधानी बना दी गई और हीरालाल शास्त्री को प्रधानमंत्री बनाया गया।
- 30 मार्च, 1949 के दिन जयपुर के सिटी पैलेस भवन में सरदार वल्लभ भाई पटेल द्वारा वृहद राजस्थान का विधिवत् उद्घाटन कर दिया गया।
- उदयपुर के महाराणा भूपालसिंह को **महाराज प्रमुख** बनाया गया।

### विशेष :

- **जयपुर और जोधपुर** में राजधानी विवाद के कारण **बी.आर .पटेल समिति** बनाई गयी।
- इस समिति में **3** सदस्य थे (बी.आर .पटेल, टी .सी .पूरी और एस. पी. सिन्हा)।
- इस समिति की सिफारिश के आधार पर जयपुर को राजधानी बनाया गया तथा जोधपुर को उच्च न्यायालय दिया गया।

**बी.आर .पटेल समिति** की सिफारिश के आधार पर विभागों का वर्गीकरण किया गया -

| | |
|---|---|
| राजधानी | जयपुर |
| शिक्षा विभाग | बीकानेर |
| वन एवं सहकारी विभाग | कोटा |
| खनिज,कस्टम और कर विभाग | उदयपुर |
| उच्च न्यायालय | जोधपुर |

Accelerate your study with educlutch.com

**नोट** : **लावा** ठिकाने को **19 जुलाई, 1948 ई** . को जयपुर में मिलाया गया था

संयुक्त वृहत् राजस्थान 15 मई, 1949 –

# राजस्थान एकीकरण का पांचवा चरण - संयुक्त वृहत राजस्थान

| | |
|---|---|
| दिनांक | 15 मई 1949 |
| रियासतें एवं ठिकाने | **वृहत राजस्थान** में **मत्स्य संघ** शामिल। |
| मुख्यमंत्री | हीरालाल शास्त्री |
| राजप्रमुख | मानसिंह द्वितीय (जयपुर) |
| राजधानी | जयपुर |

EduClutch

Accelerate your study with educlutch.com

# संयुक्त वृहत्तर राजस्थान-15 मई 1949(पाँचवा चरण)

प्रधानमंत्री - हीरालाल शास्त्री (जयपुर)
राजप्रमुख - सवाई मानसिंह द्वितीय (जयपुर शासक)

जैसा कि पूर्व में बताया जा चुका है कि मत्स्य संघ के निर्माण के समय मत्स्य संघ में सम्मिलित होने वाले चारों राज्यों अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर के शासकों को यह स्पष्ट कर दिया गया कि भविष्य में मत्स्य संघ **राजस्थान अथवा उत्तरप्रदेश** में विलीन किया जा सकता है।

**भरतपुर और धोलपुर** तो उत्तरप्रदेश में मिलना चाहते थे ,वहीं **अलवर और करौली** राजस्थान में मिलना चाहते थे।

**शंकरदेव राव समिति** की अध्यक्षता में एक समिति गठित की गई। जिसके आधार पर **मत्स्य संघ का विलय** राजस्थान में हो गया।

**शंकरदेव राव समिति** में कुल **3 सदस्य** थे-

- शंकरदेव राव
- आर.के . सिद्धवा
- प्रभुदयाल

**नोट : शोभाराम कुमावत** (मत्स्य संघ के प्रधानमंत्री) को हीरालाल शास्त्री के मंत्रिमंडल में शामिल किया गया।

राजस्थान 26 जनवरी, 1950 – Rajasthan sangh

**राजस्थान एकीकरण का छठा चरण - राजस्थान संघ**

Accelerate your study with educlutch.com

| | |
|---|---|
| दिनांक | 26 जनवरी 1950 |
| रियासतें एवं ठिकाने | संयुक्त वृहद राजस्थान एवं सिरोही का कुछ हिस्सा(माउंट आबू व देलवाडा को छोड़कर) राजस्थान में शामिल। |
| मुख्यमंत्री | हीरा लाल शास्त्री |
| राजप्रमुख | मानसिंह द्वितीय (जयपुर) |
| राजधानी | जयपुर |

## राजस्थान संघ - 26 जनवरी 1950 (छठा चरण)

मुख्यमंत्री - हीरालाल शास्त्री (जयपुर)
राजप्रमुख - सवाई मानसिंह द्वितीय (जयपुर शासक)

- संयुक्त वृहत्तर राजस्थान में **सिरोही का कुछ हिस्सा** मिलाया गया और माउंट आबू व देलवाडा +89 गाँव **बोम्बे** में मिलाए गए।
- गोकुल भाई भट्ट के **गाँव हाथल** को भी संयुक्त वृहत्तर राजस्थान में मिलाया गया था।

Accelerate your study with educlutch.com

- 22 दिसम्बर 1953 को **फजल अली समिति** बनी। इसके सदस्य **फजल अली** ,के.एम. पन्निकर और हृदयनाथ कुंजरू थे।

वर्तमान राजस्थान 1 नवम्बर, 1956

# राजस्थान एकीकरण का सातवां चरण - राजस्थान

| | |
|---|---|
| दिनांक | 1 नवम्बर 1956 |
| रियासतें | **अजमेर-मेरवाड़ा(केंद्र शासित प्रदेश)**, माउंटआबू-देलवाड़ा व मध्यप्रदेश के मंदसौर जिले का **सुनील टप्पा** राजस्थान में शामिल। सिरोंज उपखण्ड(कोटा) मध्यप्रदेश में मिलाया गया। |
| मुख्यमंत्री | मोहनलाल सुखाडिया |
| राज्यपाल | गुरुमुख निहालसिंह |
| राजधानी | जयपुर |

EduClutch

Accelerate your study with educlutch.com

# वर्तमान राजस्थान - 1 नवम्बर 1956 (सातवाँ चरण)

मुख्यमंत्री - मोहनलाल सुखाड़िया
राज्यपाल - गुरुमुख निहालसिंह

1956 में **फजल अली** के नेतृत्व में **राज्यों का पुनर्गठन** किया गया। फजल अली की सिफारिशों को भारत सरकार ने स्वीकार कर ली तथा **राज्य पुनर्गठन अधिनियम-1956** पास किया गया जो 1 नवम्बर 1956 से लागू हुआ। इस **अधिनियम** के अंतर्गत **अजमेर-मेरवाड़ा (केन्द्रशासित प्रदेश)** व मध्यप्रदेश की मंदसौर जिले की भानपुरा तहसील का **सुनेल टप्पा वाला भाग तथा सिरोही का आबू देलवाड़ा तहसील वाला भाग** राजस्थान में मिलाया गया।

**आबू व देलवाड़ा** को मिलाने के लिए **मुनि जिन सूरी विजय समिति** बनाई गयी,इसके अन्य सदस्य दशरथ शर्मा थे।

कोटा जिले का सिंरोज क्षेत्र मध्यप्रदेश में मिला दिया गया। इस दिन राजस्थान '**अ**' श्रेणी के प्रांतों की सूची में आ गया। **ठिकाने-**नीमराणा का विलय अलवर, कुशलगढ़ का विलय बांसवाड़ा तथा **लावा का विलय-जयपुर** के साथ हुआ।

**नोट :**

**7 वें संविधान संशोधन, 1956** के द्वारा **राजप्रमुख** का पद समाप्त कर दिया गया और **राज्यपाल** का पद सृजित किया गया। राजस्थान के पहले राज्यपाल **सरदार गुरुमुख निहाल सिंह** बनें।

Accelerate your study with educlutch.com

# राजस्थान एकीकरण के महत्त्वपूर्ण फैक्ट:

- अजमेर-मेरवाड़ा केन्द्रशासित प्रदेश था। **हरिभाऊ उपाध्याय** अजमेर-मेरवाड़ा के मुख्यमंत्री थे।
- **सिरोही** दो चरणों (छठा और सातवां चरण) में शामिल हुआ।
- **के.एम. पन्निकर** बीकानेर से **संविधान सभा** के सदस्य बने थे।
- हरिभाऊ उपाध्याय ने **अजमेर-मेरवाड़ा** के विलय का विरोध किया था।
- **'सत्यनारायण राव समिति'** का गठन **जयपुर व अजमेर** में राजधानी को लेकर विवाद के समाधान के लिए किया गया था। इसके अन्य सदस्य वी. विश्वनाथ और बी. के. गुप्ता थे। समिति की सिफारिश के आधार पर **'जयपुर"** को राजधानी बनाया गया और **अजमेर** को **'राजस्व विभाग'** आवंटित किया गया।
- **संविधान सभा** में शामिल होने वाली पहली रियासत बीकानेर (सार्दुल सिंह)थी और अंतिम रियासत धोलपुर(उदयभान सिंह) थी ।
- राजस्थान के एकीकरण के समय सभी रियासतें **बी श्रेणी** में आती थी।
- **नॉन सेल्यूट स्टेट** ठिकाने थे – नीमराना,लावा और कुशलगढ़।
- राजस्थान के एकीकरण की प्रक्रिया के दौरान राज्य की **राजधानी के मुद्दे** को सुलझाने हेतु किसकी अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया था – **बी .आर .पटेल।**
- राजस्थान की **जैसलमेर** रियासत को **पं. जवाहर लाल नेहरू** ने **'विश्व काआठवां आश्चर्य'** कहा था।
- आजादी के बाद **जोधपुर** के शासक **महाराजा हनुवन्त सिंह** अपनी रियासत को एक स्वतंत्र इकाई के रूप में रखना चाहते थे।
- रियासतों से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान के लिए **'रियासती विभाग'** की स्थापना **5 जुलाई 1947** को हुई।
- **शंकर राव देव समिति** का गठन **धौलपुर एवं भरतपुर** राज्यों की जनता की इस बात के लिए राय जानने के लिये किया गया था कि वे राजस्थान अथवा उत्तरप्रदेश किसमें मिलना चाहते हैं, इस समिति में अध्यक्ष सहित सदस्य थे – **4**
- मेवाड़ के शासक **भूपालसिंह** मालवा व गुजरात के राजाओं की संयुक्त बैठक बुलाकर संघ बनाना चाहते थे - **मेवाड़ यूनियन**
- **राजस्थान युनियन** का गठन करने हेतु **25-26 जून, 1946 ई.** को राजपूताना, गुजरात व मालवा के नरेशों का सम्मेलन बुलाया था - **मेवाड़ महाराणा**
- सर्वप्रथम **लॉर्ड लिनलिथगो** ने **1939 ई.** में राजस्थान की रियासतों के समूहीकरण व एकीकरण का मुद्दा उठाया था।
- राजस्थान एकीकरण के तहत सबसे पहले **हस्ताक्षर** करने वाले राजा थे – **तेज सिंह**

Accelerate your study with educlutch.com

- राजस्थान के **प्रथम एवं अंतिम महाराजा प्रमुख** थे - **महाराणा भूपाल सिंह**
- **राज्य पुनर्गठन आयोग(फजल अली आयोग)** की सिफारिशों पर **आबू - देलवाड़ा** तहसीलों एवं अजमेर - मेरवाड़ा क्षेत्र को राजस्थान में मिलाया गया।
- अजमेर के राजस्थान में विलय से पूर्व **अजमेर** की **विधानसभा(धारा)** में सदस्यों की संख्या **30** थी।
- भरतपुर एवं धौलपुर दोनों रियासतें उत्तरप्रदेश में शामिल होना चाहती थी, जिन्हें जनमत संग्रह के आधार पर राजस्थान में शामिल किया गया।

# राजस्थान का एकीकरण ट्रिक:

- **राजप्रमुख का शॉर्ट ट्रिक**: उदार भीम को भूपाल सिंह ने माना राजप्रमुख।
- **चरणों की महीने की छोटी सी ट्रिक:** मा मा आप मा मी जा न (मार्च मार्च अप्रैल मार्च मई जनवरी नवंबर)
- **राजधानी ट्रिक:** अलवर का उदय जयपुर से हुआ।
- **प्रधानमंत्री ट्रिक** : शोगो माही -ही -ही।

## राजस्थान एकीकरण के समय शासक

| रियासत का नाम | राजा नाम |
|---|---|
| अलवर | तेजसिंह |
| भरतपुर | बृजेन्द्र सिंह |
| धौलपुर | उदयभान सिंह |
| करौली | गणेशपाल देव |
| कोटा | भीमसिंह |
| बूंदी | बहादुर सिंह |
| झालावाड़ | हरिश्चंद्र |

Accelerate your study with educlutch.com

| | |
|---|---|
| बाँसवाड़ा | चन्द्रवीर सिंह |
| डूंगरपुर | लक्ष्मण सिंह |
| प्रतापगढ़ | रामसिंह |
| शाहपुरा | सुदर्शन देव |
| किशनगढ़ | सुमेर सिंह |
| टोंक | फारुख अली |
| उदयपुर | भूपाल सिंह |
| जयपुर | मानसिंह - II |
| जोधपुर | हनुवंत सिंह |
| जैसलमेर | जवाहर सिंह |
| बीकनेर | सार्दुल सिंह |
| सिरोही | अभय सिंह |

Accelerate your study with educlutch.com